"एलोवेरा की खेती" – कृषि आय के लिए वरदान

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 150–151

"एलोवेरा की खेती" –कृषि आय के लिए वरदान

अंजू शुक्ला, रवि कुमार एवं देवेश यादव
शोधार्थी छात्र,
चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
कानपुर (उत्तर प्रदेश) 208002, भारत।

Email Id: shukla32111@gmail.com

परिचय

घृत कुमारी या अलोवेरा/एलोवेरा, जिसे क्वारगंदल या ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है, एक औषधीय पौधे के रूप में विख्यात है। इसकी उत्पत्ति संभवतः उत्तरी अफ्रीका में हुई है। एलोवेरा एक लोकप्रिय औषधीय पौधा है जिसका उपयोग हजारों वर्षों से किया जाता आ रहा है। सनबर्न को दूर करने और घावों को ठीक करने वाले उत्पादों में एलोवेरा को प्रयोग में लाया जाता रहा है। पेट की कई समस्याओं को दूर करने के साथ त्वचा को लंबे समय तक जवां बनाए रखने में एलोवेरा जूस का सेवन फायदेमंद हो सकता है। एलोवेरा में एंटीऑक्सिडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं जो इस पौधे को औषधीय रूप से काफी खास बनाते हैं। एलोवेरा जेल में पॉलीफेनोल्स नामक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट होते हैं। ये मनुष्यों में संक्रमण पैदा करने वाले कुछ बैक्टीरिया के विकास को रोकने में मदद करते हैं।

एलोवेरा की वृद्धि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

एलोवेरा की खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसके अलावा इसे पहाड़ी और बलुई दोमट मिट्टी में भी उगाया जा सकता है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, और हरियाणा ऐसे राज्य है, जहां एलोवेरा की खेती व्यापारिक रूप से की जाती है। इसकी खेती में भूमि का पीएच मान 8.5 तक होना चाहिए।

एलोवेरा की उन्नत किस्में

भारत में एलोवेरा की कई उन्नत किस्में मौजूद है, जिन्हे अधिक पैदावार और मुनाफे के लिए उगाया जाता है। एलोवेरा की अच्छी उपज के लिए बढ़िया किस्म का पौधा ही लगाना चाहिए। केंद्रीय औषधीय संघ पौध संस्थान द्वारा ऐसी किस्मो का वर्णन किया गया है, जिनसे अधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। अधिक पैदावार देने वाली एलोवेरा की किस्म एल– 1, 2, 5, सीम–सीतल और 49 है। अनेक प्रकार के परीक्षण के बाद इन किस्मो को तैयार किया गया है, जिसमे अधिम मात्रा में एलोवेरा का गूदा प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त भी एलोवेरा की कई उन्नत किस्म मौजूद है, जिन्हे व्यापारिक रूप से उगाने के लिए काफी उपयुक्त माना जाता है। इसमें आई. सी. 111273, आई.सी.111280, आई. सी. 111269 और आई. सी. 111271 शामिल है।

एलोवेरा के खेत की तैयारी

एलोवेरा की फसल को खेत में लगाने से पहले उसके खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए। खेत की गहरी जुताई करनी होती है, जुताई के बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दिया जाता है। इसके बाद खेत में रोटावेटर लगाकर इसकी दो से तीन तिरछी जुताई की जाती है। जुताई के बाद एक एकड़ के खेत में तकरीबन 10 से 15 पुरानी गोबर की खाद को डालकर मिट्टी

में अच्छे से मिला देना चाहिए। इसके पौधों की कटाई एक वर्ष में कर ली जाती है। खेत में नमी बनाये रखने के लिए पानी छोड़ कर उसकी जुताई कर दी जाती है। इसके कुछ दिनों बाद खेत फसल लगाने के लिए तैयार हो जाता है।

एलोवेरा लगाने का सही समय और तरीका

एलोवेरा के बीजो की रोपाई बीज के रूप में न होकर पौध के रूप में की जाती है। रोपण के समय एलोवेरा 4 महीना पुराना होना चाहिए, जिसमे 4 से 5 पत्तियां लगी होनी चाहिए। पौधों की अधिक समय तक पैदावार प्राप्त करने के लिए भूमि से 15 सेटी. मी की दूरी पर लगाना उपयुक्त माना जाता है। एलोवेरा के पौधों के बीच में 60 सेटी. मी की दूरी अवश्य रखे। एलोवेरा के पौधों को लगाने के लिए जुलाई का महीना सबसे उपयुक्त माना जाता है। क्योकि इस दौरान बारिश का मौसम होता है, जिससे इसके पौधों को पर्याप्त मात्रा में नमी प्राप्त हो जाती है।

एलोवेरा के पौधों में लगने वाले रोग एवं उनकी रोकथाम

इसके पौधों में न के बराबर ही रोग देखने को मिलते है। किन्तु कभी–कभी इसके पौधों की पत्तियों में सड़न और धब्बा रोग दिखाई दे जाता है। इस तरह के रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर मैंकोजेब, रिडोमिल और डाइथेन एम–45 की उचित मात्रा का छिड़काव करे।

एलोवेरा की कटाई की विधि और उपज

एलोवेरा के पौधे रोपाई के 8 महीने के बाद कटाई के लिए तैयार हो जाते है। जब इसके पौधों की पत्तियां पूर्ण रूप से विकसित दिखाई देने लगे तब उनकी कटाई कर लेनी चाहिए। पहली कटाई के बाद इसके पौधे 2 महीने बाद दूसरी कटाई के लिए तैयार हो जाते है। इसके एक एकड़ के खेत में तकरीबन 11,000 से अधिक पौधों को लगाया जा सकता है, जिससे 20 से 25 टन की पैदावार प्राप्त हो जाती है। एलोवेरा का बाजारी भाव 25 से 30 हजार रूपए प्रति टन होता है, जिससे किसान भाई एलोवेरा की एक बार की फसल से 4 से 5 लाख तक की कमाई आसानी से कर सकते है।

एलोवेरा उपोत्पाद और उपयोग

एलोवेरा उद्योग दुनिया भर में फल–फूल रहा है। पत्ती के गूदे का प्रसंस्करण एक बड़ा विश्वव्यापी उद्योग बन गया है। जेल युक्त स्वास्थ्य पेय पदार्थों के उत्पादन के लिए, खाद्य पदार्थों के स्रोत के रूप में, कॉस्मेटिक और प्रसाधन उद्योग में, क्रीम, लोशन, साबुन, शैंपू, चेहरे की सफाई करने वाले और अन्य उत्पादों के उत्पादन के लिए आधार सामग्री के रूप में किया गया है। उपभोक्ता के विश्वास को बनाने और एलोवेरा उत्पादों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उत्पाद के दावों का गहन नैदानिक परीक्षणों एवं सरकारी नियामक प्राधिकरणों द्वारा सत्यापित और प्रमाणित किया जाना चाहिए।

एलोवेरा के दुष्प्रभाव

एलोवेरा के गुणों से हर कोई रूबरू है। हेल्थ के लिए एलोवेरा काफी लाभयादक होता है। स्किन संबंधी गई समस्यों के लिए एलोवेरा रामबाण है। लेकिन जरूरत से ज्यादा अगर एलोवेरा का भी इस्तेमाल किया जाए तो सेहत के लिए हानिकारक होता है। जूस से लेकर तरह से एलोवेरा का सेवन आमतौर पर लोग करते हैं, लेकिन एलोवेरा जूस का सेवन करने से डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। एलोवेरा का अधिक मात्रा में सेवन करने से ब्लड प्रेशर लो हो सकता है।

इसलिए हम सभी को एलोवेरा के सभी लाभों का उपयोग करने के लिए संतुलित और निर्धारित मात्रा में सेवन करना चाहिए।